International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 16-10-2020; Accepted: 30-10-2020; Published: 22-11-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 42-44

मलयज के पत्र का साहित्यक स्वरूप

अरविन्द कुमार
हिन्दी विभाग शिवसागर विद्या मन्दिर रामदौली, दिल्ली, भारत

सारांश
मलयज अत्यंत संवेदनशील, चेतस बौद्धिकता को लिए हुए व्यक्ति थे। उनके लिए डायरी लिखना सिर्फ मन को हल्का कर लेने जैसा नहीं था। मलयज के लिए डायरी लिखना वाद–विवाद के रास्ते संवाद तक पहुँचने जैसा था। दूसरी तरह से कह सकते हैं कि मलयज के लिए डायरी लिखना अपने जीवन की तमाम अनुभुतियों को समेटकर उसे तर्क की कसौटी पर कसकर अगला–अगला और अगले की ओर अग्रसर होने के जीने के कर्म जैसा था।

मूल शब्दः मलयज संवेदनशील बौद्धिकता

प्रस्तावना

मलयज के लिए डायरी जिस तरह जीवन जीने का कर्म था उसी तरह पत्र उनके लिए जीवन को संप्रषित करने का माध्यम था। द्व मलयज की डायरी से जो कुछ बचता है वह उनके पत्र में बयां हो जाता है। मलयज जी का पत्र देखने से पता चलता है कि मलयज पत्र में कभी बहकते नही थे, बल्कि बहुत हीं चेतस विचारोत्तेजक एवं सहनशीलता को लिए हुए व्यावहारिक पत्र लिखते थे। मलयज के पत्र की अपनी मौलिकता एवं रंग है। उनका पत्र व्यक्तिगत कम साहित्यिकता को ज्यादा लिए हुए है। वैसे तो मलयज का पत्र व्यवहार बहुत लोगों के साथ हुआ होगा परन्तु उनके मरणोपरांत कुछ लोगों के द्वारा हीं उनके पत्रों को उपलब्ध कराया गया जिसमें '' रमेश चन्द्र शाह'' उनके मामा ''श्री राम वर्मा'' शाह जी की पत्नी ज्योत्सना जी, अशोक जी, प्रभात जी एवं उनके सगे संबंधी हैं। एक–दो पत्र ऐसे भी मिले हैं जो शमेशर ने मलयज को लिखे हैं।

रमेशचन्द्र शाह ने पूर्वग्रह के अंक में मलयज के पत्रों की एक श्रृंखला प्रस्तुत करते हुए लिखा है कि उनकी डायरीयों की तरह हीं उनके पत्र भी उनके व्यक्तित्व की आंतरिक जरूरत और अर्थान्वेषी पर्युत्सुकता को प्रकट करते हैं। इस विरोधाभास में कुछ सच्चाई, जरूर है कि एक कवि अपनी भावनाओं के प्रति अपने निरीक्षणों और प्रतिक्रियाओं में भी कहीं ज्यादा निस्संग हुआ करता है। उसके लिए भाव या विचार सिर्फ आत्माभिव्यक्ति का निमित्त नहीं होते। वह उन्हें देखता है, वस्तु की तरह उन्हें छुता और बरतता है। औरों की अपेक्षा कहीं ज्यादा जिम्मेदारी के साथ। क्योंकि उसके लिए सत्य की खोज इस प्रत्यक्ष अनुभव और एन्द्रिकता के भीतर से हीं वास्तविक बनती है। इसलिए उसके विचारों में व्यक्तियों अथवा घटनाओं अथवा दृश्यों के प्रति उसकी भाव– प्रतिक्रियाओं में भी सारी दिखाई देने वाली उत्तेजना और अतिरिक्तता के बावजूद कोई आत्मतुष्ट, निर्णायकता नहीं होती, – एक टटोल, एक संवेदनजनित प्रत्यक्षता होती है, जो अपने एक ब्यौरे में नहीं, एक समुचे भाव प्रसंग में हीं अर्थोन्मेष करती है। इन पत्रों में जहाँ एक ओर '' प्रकृति '' प्रेरित चिंतन–मनन है – प्रत्यक्ष संवेदन की ताजगी लिए हुए, वहीं ऐसे अध्ययन प्रसंग भी है जो के खोजी– जिज्ञासु स्वभाव को उनकी विश्लेषण शक्ति और मूल्य–चिंता को भी उभारते हैं।''

मलयज की सोच साहित्य से इत्तर कुछ भी हीं नहीं। मलयज अपने पत्र में कभी लापरवाह नहीं दिखते। दिनांक 10.10.69 को लिखे एक पत्र जो रमेश चन्द्र शाह के नाम है, उसमें लिखा है कि '' प्रसाद वाले लेख पर और अन्य तमाम ढ़ेर सारी चीजों पर चर्चा हो सकेगी। आप डमजं चीलेपबंस च्वमजे रस ले लेकर पढ़ रहे हैं यह जानकर थोड़ी ईर्ष्या भी हुई। डमजं चीलेपबंस च्वमजे मेरे शुरू से हीं प्रिय कवि रहे हैं।''

वास्तव में मलयज का पत्र भावना प्रधान नहीं बल्कि चिंतन प्रधान है। पत्र की भाषा सहजता को लिए हुए है। वैसे तो उस समय संप्रेषणीयता का सहज माध्यम पत्र व्यवहार हीं था लेकिन मलयज के लिए यह पत्र व्यवहार सिर्फ संप्रेषणीयता का हेतु हीं नहीं बल्कि अपने अकेलेपन में आये ठंडेपन को दूर कर गर्माहट बरकरार रखने का भी माध्यम था। मलयज अपनी डायरी में लिखते हैं। ''आज भी कोई चिट्ठी नहीं! तबियत किस तरह बेजार हो उठी है। दोपहर होने तक आशा रहती है कि कोई चिट्ठी आयेगी, पर भारी–भारी सी दोपहर बीत जाती है और कुछ नहीं होता। इतनी भी ताव नहीं होती कि डाकघर में हीं जाकर पूछ आँऊ ----'' वास्तव में मलयज को अपनी बिमारी के कारण अक्सर घर से बाहर पहाड़ों पर जाना पड़ता था। स्वास्थ्य में सुधार होने पर हीं पुनः वापस घर को लौटते। इस दौरान पत्र हीं एक

माध्यम था जिसके द्वारा वे अपने मित्र सगे–संबंधियों एवं जरूरत के लोगों से जुड़े रहते। रमेशचन्द्र शाह जी को 03.08.80 को लिखे एक पत्र में लिखते हैं कि साहित्य अकादमी में हीं निर्मल जी से भेंट हो गयी। भीड़–भाड़ थी। ज्यादातर समय में अपनी रोग–गाथा हीं उन्हें सुनाता रहा और वे बोर भी हुए ऐसा लगा। इतने दिनों बाद मिलने पर मुझे कुछ और बातें करनी थी। पर उन्होंने पूछा तो मेरा रेला चल पड़ा। वे खामोशी से सुनते रहे कहते भी क्या? बाद में मैं बड़ा पछताया। इसकी क्षतिपूर्ति किसी दिन करनी है। इसी पत्र में मलयज आगे लिखते है कि '' पढ़ने को इधर कुछ नहीं मिल रहा है। पढ़ने की तबियत होती है। जितने कविता संगह मिले सब पढ़ डाले। कुँवरनारायण का संग्रह हीं कुछ जमा।''

मलयज की दुनिया पूर्णतः साहित्य की चासनी में डूबा था। यह साहित्य की चासनी यर्थाथ के धरातल पर तटस्थता का भाव लिए एक कवि एवं आलोचक के रूप में संपृक्त था। अपने पत्रों में भी मलयज सहज हीं भाव से अपने तर्को को उड़ेलते हैं। शाहजी को हीं लिखे 23.12.80 के एक पत्र में लिखते हैं कि इधर पूर्वग्रह वाला तुम्हारा निबंध मैंने दुबारा पढ़ा। उसमें दो तीन चीजें तुमने बड़े मार्के की उठायी है। जैसे यही ब्लैसफहमी वाली बात। तुमने उसे अराजक आनन्दवाद के रूप में परिभाषित किया है जो एक तरह से वर्त्तमान समाज व्यवस्था को चुनौती सी है जो माधव धीसू देते हैं। पर यह नुक्ता तुमने सिर्फ उठाकर छोड़ दिया है, उसे और गहराई और विस्तार में पल्लवित– पुष्पित नहीं किया है। मेरे ख्याल से ब्लैसफेमी क्यों है इसे तुम्हें और–और संदर्भो में भी देखना चाहिए था और प्रेमचन्द अगले कृतित्व के लगभग अंत में यहाँ पहुँचे यह भी एक महत्वपूर्ण बात है जिसे तुम्हें व्याख्यायित करना चाहिए था। क्या तुम ऐसा नहीं सोचते कि ऐसा – यह ब्लैसफेमी का तत्व प्रेमचन्द मार्क्सवादी रुझाान के कारण आया? क्योंकि आखिर मार्क्सवाद की समाज को बदलने की धारणा परंपरावादी हिन्दु दृष्टि में एक ब्लैसफेमी हीं तो है ;शायद ईसाई जीवन दृष्टि में भी)। माधव–धीसू एक तरह से जो जैसा है उसे वैसा स्वीकार न कर वर्त्तमान समाज व्यवस्था को जैसे बदल डालना चाहते है। और यही उनकी ब्लैसफैमी है।'' इसी पत्र में लिखते है कि '' मेरे त्रिलोचन वाले लेख में औसत भारतीयता वाली धारणा को तुमने प्रेमचन्द पर लागु किया है– एक प्रश्न के रूप में वह एक तरह से मेरे मन की भी बात है। इस तर्क से मुझे न सिर्फ प्रेमचन्द बल्कि रामचन्द्र शुक्ल भी औसत भारतीयता के हीं लेखक लगते हैं। छायावाद के पहले तक यही औसत भारतीयता थी। छायावाद ने हीं उसमें पेंच पैदा किया, एक असाधारणता भरी, विलक्षणता, लाक्षणिकता, चमत्कार, चमक, लय, उड़ान,। इस प्रवृति का चरम उत्कर्ष अज्ञेय में हुआ। ऊपर से अज्ञेय बड़े भारी भारतीयतावादी लगते हैं– क्योंकि उसका उद्घोष करते हैं – पर मुझे लगता है अज्ञेय सबसे कम भारतीय है, निर्मल वर्मा से भी कम। यह बात लिखकर मैं खुद थोड़ा चौंक गया हूँ, पर अपनी कही हुई बात को यूँ हीं उड़ा देने का जी नहीं होता। मुझे लगता है उस बात के भीतर कोई गहरी बात है। उसे मुझे ढूँढना होगा।

यहीं एक दूसरा सवाल मेरे भीतर उठ रहा है। क्या भारतीयता की खास पहचान उसके औसतपन में हीं है, क्या औसत रहकर हीं भारतीय हुआ जा सकता है? क्या भारतीयता और आधुनिकता परस्पर विरोधी चीजें हैं। दोनों क्या कहीं किसी बिंदु पर मिलते हैं। कहाँ है वह बिन्दु! और कैसा है उसका स्वरूप? वह सिन्थेसिस है या समझौता? समझौता या औसतपन? एक औसत भारतीय और एक औसत आधुनिकतावादी दोनों क्या एक है? यहाँ मुझे एकाएक लगता है कि अज्ञेय बहुत दूर तक आधुनिक भी नहीं है, वे एक औसत आधुनिक हैं, और शायद इसलिए कि उनमें कहीं न कहीं एक भारतीय भी है।''

इस तरह मलयज के संपूर्ण पत्र में साहित्य की बेचैनी दिखती है। यह मलयज जैसे साहित्य साधक हीं लिख सकते हैं। मलयज के भीतर की साहित्यिक बेचैनी हीं उनके जीवन जीने का स्रोत बना रहा, नहीं तो जिस तरह से मलयज बीमार थे वह अपनी इस अल्पआयु को भी नहीं जी पाते। एक अस्वस्थ शरीर में ऊर्जा से लबा–लब भरे स्वस्थ मानसिकता लिए।

इसी तरह ज्योत्सना जी एवं अपने मामा श्रीराम वर्मा को भी जो उन्होंने पत्र लिखा, उसमें भी साहित्यिक चर्चा हीं दिखती है। अपने मामा श्रीराम वर्मा को 11.08.80 को लिखे एक पत्र में लिखते हैं '' रामचन्द्र शुक्ल से संबंधित जिन पुस्तकों के नाम आपने लिखें हैं वे मैंने देख रखी है। वे मेरे मसरफ की किताबें नहीं हैं। मुझे दुसरों को लिखीं किताबें पढ़कर शुक्ल जी पर किताब नहीं लिखनी है। मैं शुक्ल जी को लिखी किताबों पर हीं ध्यान केन्द्रित करुँगा क्योंकि मुझे कोई एकेडमिक ढ़ंग की किताब नहीं लिखनी है, बल्कि उनपर नया विचार प्रस्तुत करना है। इस संबंध में चन्द्रशेखर शुक्ल द्वारा लिखित शुक्ल जी की जीवनी की मुझे बहुत आवश्यकता पड़ेगी। बनारस में हीं यह किताब मिलेगी। चिंतामणी भाग–2 भी बनारस में हीं मिलेगा।''

03.07.81 के एक इसी तरह के पत्र में लिखा है कि '' आप लगता है यह मान बैठे है कि जो आलोचक होता है वह रचनाकार नहीं हो सकता– दोनों में आप अन्तर्विरोध मानते हैं। यह एक रोमांटिक धारणा है और इसमें वस्तुतत्व नहीं है। कुछ यही धारणा शायद आप मुझ पर भी लागु करते हैं। मैं एक अच्छा आलोचक हूँ इसलिए अच्छी कविता नहीं लिख सकता, यह आप मानते हैं।

इसी तरह इस पत्र में आगे लिखते हैं कि मुक्तिबोध के बारे में आपने बहुत सही और सारगर्भित टिप्पणी की है। एक प्रश्न पूछना चाहूँगा, मार्क्सवाद अधूरा है, पर क्या इसके

मुकाबले इससे बेहतर कोई चीज आप इस समय पाते हैं ? वह क्या है ?
मलयज के पत्रों की यह साहित्यिक बेचैनी, उत्सुकता, तार्किकता, वैचारिकता– देखकर यही पता चलता है कि मलयज हिन्दी साहित्य रूपी महासागर के चेतस गोताखोर थे जो महासागर के तल से मोती रूपी रचनाओं को बाहर निकालकर परिष्कार कर रहे थे। इसीलिए तो मलयज का पत्र भी साहित्यिकता को लिए हुए है।

सन्दर्भ सूची

1. पूर्वग्रह का मलयज स्मृति विशेषांक (संयुक्तांक 51–52)
2. मलयज के पत्र– सं0 रमेश चन्द्र शाह